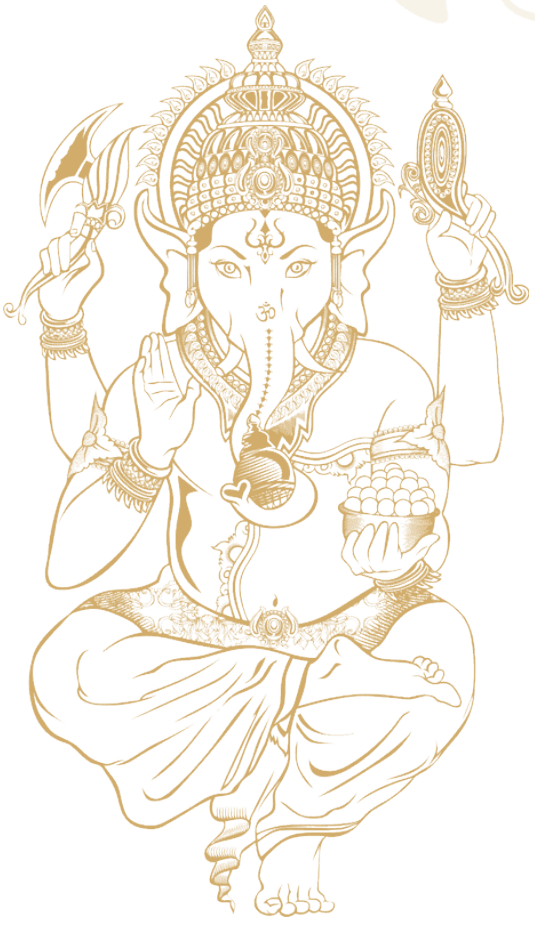

Mr.d

Ms.c

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119639202

| | | |
|---|---|---|
| पुल्लिंग | लिंग | स्त्रीलिंग |
| 1-02/11/2000 | जन्म तिथि | 16-17/10/2005 |
| बुध-गुरुवार | दिन | रवि-सोमवार |
| घंटे 06:00:00 | जन्म समय | 06:00:00 घंटे |
| घटी 58:36:18 | जन्म समय(घटी) | 59:03:19 घटी |
| India | देश | India |
| Delhi | स्थान | Delhi |
| 28:39:00 उत्तर | अक्षांश | 28:39:00 उत्तर |
| 77:13:00 पूर्व | रेखांश | 77:13:00 पूर्व |
| 82:30:00 पूर्व | मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| घंटे -00:21:08 | स्थानिक संस्कार | -00:21:08 घंटे |
| घंटे 00:00:00 | ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| 06:33:28 | सूर्योदय | 06:22:40 |
| 17:35:48 | सूर्यास्त | 17:50:28 |
| 23:51:50 | चित्रपक्षीय अयनांश | 23:56:12 |

| विंशोत्तरी | अंश | राशि | ग्रह | राशि | अंश | विंशोत्तरी | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शुक्र 8वर्ष 0मा 23दि | 07:53:31 | तुला | लग्न | कन्या | 23:56:07 | बुध 8वर्ष 5मा 24दि | |
| मंगल | 16:01:42 | तुला | सूर्य | कन्या | 29:48:10 | शुक्र | |
| 25/11/2024 | 21:17:29 | धनु | चंद्र | मीन | 23:20:47 | 11/04/2021 | |
| 26/11/2031 | 04:51:49 | कन्या | मंगल व | मेष | 27:45:07 | 11/04/2041 | |
| मंगल 23/04/2025 | 09:32:50 | तुला व | बुध | तुला | 18:24:05 | शुक्र 11/08/2024 | |
| राहु 11/05/2026 | 15:33:11 | वृष व | गुरु | तुला | 04:04:59 | सूर्य 11/08/2025 | |
| गुरु 17/04/2027 | 22:48:08 | वृश्चि | शुक्र | वृश्चि | 15:55:24 | चन्द्र 12/04/2027 | |
| शनि 26/05/2028 | 05:00:48 | वृष व | शनि | कर्क | 16:10:27 | मंगल 11/06/2028 | |
| बुध 23/05/2029 | 24:01:04 | मिथु व | राहु व | मीन | 19:43:19 | राहु 11/06/2031 | |
| केतु 20/10/2029 | 24:01:04 | धनु व | केतु व | कन्या | 19:43:19 | गुरु 09/02/2034 | |
| शुक्र 20/12/2030 | 23:02:55 | मक | हर्ष व | कुंभ | 13:16:20 | शनि 11/04/2037 | |
| सूर्य 26/04/2031 | 10:00:43 | मक | नेप व | मक | 20:54:28 | बुध 10/02/2040 | |
| चन्द्र 26/11/2031 | 17:39:39 | वृश्चि | प्लूटो | वृश्चि | 28:24:48 | केतु 11/04/2041 | |

**लग्न-चलित**

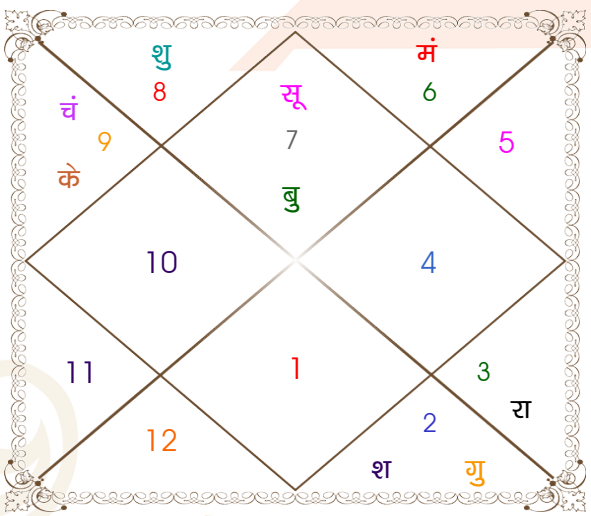


**लग्न-चलित**

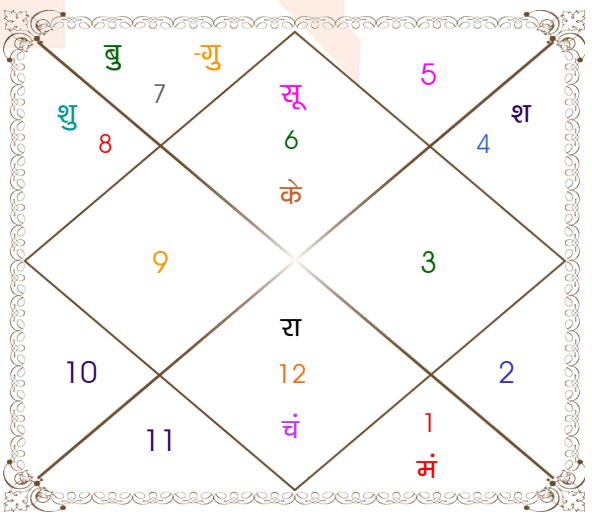

## अष्टकूट गुण सारिणी

| कूट | वर | कन्या | अंक | प्राप्त | दोष | क्षेत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ण | क्षत्रिय | विप्र | 1 | 0.00 | -- | जातीय कर्म |
| वश्य | चतुष्पाद | जलचर | 2 | 1.00 | -- | स्वभाव |
| तारा | विपत | मित्र | 3 | 1.50 | -- | भाग्य |
| योनि | वानर | गज | 4 | 2.00 | -- | यौन विचार |
| मैत्री | गुरु | गुरु | 5 | 5.00 | -- | आपसी सम्बन्ध |
| गण | मनुष्य | देव | 6 | 5.00 | -- | सामाजिकता |
| भकूट | धनु | मीन | 7 | 7.00 | -- | जीवन शैली |
| नाड़ी | मध्य | अन्त्य | 8 | 8.00 | -- | स्वास्थ्य/संतान |
| कुल : | | | 36 | 29.50 | | |

डतण्क का वर्ग मूषक है तथा डेण्ब का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्क और डेण्ब का मिलान अत्युत्तम है।

## मंगलीक दोष मिलान

डतण्क मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

**व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।**
**द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।**

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतण्क कि कुण्डली में द्वादश भाव में कन्या राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण्ब मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

**तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।**
**विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।**

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण्ब कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।**

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

**त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।**
**त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।**

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डेण्ब कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

**यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।**
**अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।**

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि डतण्क कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्क तथा डेण्ब में मंगलीक मिलान ठीक है।

## निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।